उपसंहार

उपसंहार

हिंदी उपन्यास साहित्य में वर्णित शिवाजी के चरित्र-चित्रण का विवेचन करते समय विभिन्न स्थलों पर हमारे विचार व्यक्त हुए हैं वे विचार अत्यंत संक्षिप्त रूप में हम उपसंहार में दे रहे हैं ।

ऐतिहासिक हिंदी साहित्य और शिव-चरित्र --

साहित्यकार का सत्य इतिहासकार के सत्य से भिन्न होता हैं । साहित्य में कल्पना का स्थान होता हैं । मूल सत्य की हानि न करके ऐतिहासिक साहित्यिकार कल्पना की उडान ले सक्ता हैं ।

इतिहास में नायक का व्यक्तिगत जीवन चरित्र नहीं होता हैं । इतिहास में सत्य घटनाओं के आधार पर नायक का चित्रण किया जाता हैं । अत: साहित्यिक यहाँ अपनी कल्पनाशक्ति से चित्रण करके अपनी रचना को सरस बना सक्ता हैं । कल्पना का प्रयोग करते समय साहित्यकार को ऐतिहासिक ढाँचा कायम रखते हुए उसमें सिर्फ रंग भरने का काम करना चाहिए । मूल ढाँचे को बदलने का अधिकार साहित्यकार को नहीं हैं ।

मानव मन में अपने अतीत के बारेमें एक सहजात आकर्षण और जिज्ञासा होती हैं । इस जिज्ञासा तृप्ति के लिए ऐतिहासिक साहित्य की रचना होती हैं । अतीत का पुनर्निर्माण करना, वर्तमान काल की समस्याओंका हल अतीत के आधार पर प्रस्तुत करना,चरित्र नायक को न्याय देना, जाति गौरव करना, वीर पूजा करना, और नई पीढी को चारित्रिक शिक्षा देने के उद्देश्य से ऐतिहासिक साहित्य की रचना होती हैं ।

साहित्यक मानते हैं कि शिवाजी के चरित्र में मानवी श्रेष्ठ गुणों का सुंदर समन्वय हो गया हैं ।

उपन्यास साहित्य --

उपन्यासकारों ने शिवाजी के विभिन्न रूपों का बालरूप, किशोर रूप, युवारूप और प्रौढ रूप का सुंदर वर्णन किया हैं । उपन्यास साहित्य में शिवाजी के चरित्र का बहिरंग चित्रण सुंदर हुआ हैं ।

उपन्यास साहित्य में शिवाजी के बचपन और शिक्षा, मातृभक्ति, वाणी, दूरदृष्टि, कार्यक्षमता, स्वाभिमान, स्वधर्माभिमान, धार्मिक उदारता, नैतिकता इन गुणों का वर्णन संतोषजनक हुआ हैं । पितृभक्ति, गुरुभक्ति, वीरता और धाक का वर्णन सामान्य स्तर का हुआ हैं । मनहर चौहान ने शिवाजी का एक स्नेही पिता के रूप में सुंदर चित्रण किया हैं । शिवाजी की रणनीति का वर्णन करते समय उपन्यासकार उनकी सावधानता, भेदनीति, साथियों से प्रेम, कठोर अनुशासन और चातुर्य का अत्यंत प्रभावी वर्णन करते हैं । एक महान राष्ट्र-भक्त के रूप में शिवाजी का चित्रण करने में उपन्यासकार सफल हो गए हैं ।

शिवाजी के शासकीय गुणों का वर्णन करते समय उपन्यासकारों ने उनके अत्याचार विरोधी, धार्मिक उदारता, चातुर्य, व्यवहारी, मनुष्यपारखी, न्याय - प्रियता आदि गुणों का सुंदर वर्णन किया हैं । शिवाजी को नि:स्वार्थी लोक - नायक कहकर वे उनका गौरव करते हैं । इस विधा में शिवाजी के कार्य का सर्वांगीण वर्णन नहीं हुआ हैं ।

शिवाजी के चरित्र की हानि ---

कल्पना का अयोग्य स्थानपर प्रयोग, इतिहास विरुद्ध चित्रण, इतिहास के गहरे अध्ययन का अभाव और अपने काल की समस्याओं को शिवाजी के

चरित्र के माध्यम से हल करने के प्रयास के कारणों से शिवाजी के चरित्र की हानि हो गई है ।

पात्रों के गलत नाम,प्रसंग के गलत स्थान और काल विपर्यास की कुछ गलतियाँ हिंदी उपन्यास साहित्य में हुई हैं । इन गलतियों से शिवाजी के चरित्र को गंभीर हानि नहीं होती ।

कुछ उपन्यासकारों ने शिवाजी के शौर्य का वर्णन करते समय उनके कार्य का भी वर्णन किया है । दैवी शक्ति की कृपा से शिवाजी विजयी होते थे, इस प्रकार वर्णन करते हुये परमेश्वरप्रसाद सिंह ने शिवाजी के शौर्य की हानि की है । शिवाजी की दानवीरता या गुरुभक्ति का चित्रण करते समय उस वर्णन में बहकर कुछ साहित्यकारों ने इस प्रकार का चित्रण किया है कि शिवाजी मुक्त हस्त से जागीरदान करते थे, इससे शासकीय गुणों की हानि की है । जागीर प्रणाली को खत्म करना शिवाजी के शासन का एक उद्देश्य था ।

आधुनिक उपन्यासकार चित्रित करते हैं कि रामदास के आशीर्वाद से ही शिवाजी का कार्य संपन्न हुआ,शिवाजी के कार्य के योजक रामदास थे, रामदास ने ही शिवाजी के माध्यम से स्वराज्य स्थापना का कार्य किया । परिणाम स्वरुप शिवाजी के कार्य का श्रेय विभक्त होकर उनके चरित्र की हानि हो गई है । इस प्रकार के चित्रण से उनके चरित्र की पर्याप्त हानि हो गई है । उनके कार्य का श्रेय वास्तव में उन्हें ही मिलना चाहिए ।

शिवाजी के चरित्र - चित्रण का साहित्यिक सौन्दर्य ---

बहिरंग चित्रण करते समय उपन्यासकारों ने विविध प्रणालियों का सफलता से प्रयोग किया है । कुछ गलतियाँ होते हुए भी अधिकांश साहित्यकारों ने बहिरंग चित्रण सफलता से किया है । शिवाजी की एक भव्य,दिव्य,सजल,पवित्र, श्रेष्ठ और सजीव प्रतिमा हमारे सामने मूर्त करने में साहित्यिक सफल हुए हैं ।

अफ़जलवध, शाहिस्ताखाँ - दुर्दशा, पुरंदर संधि, शिवाजी और औरंगजेब भेट, आगरा से पलायन और राज्याभिषेक की प्रमुख घटनाओं के आधार पर ही अधिकांश साहित्यिकों ने शिवाजी का चरित्र - चित्रण किया है। उपन्यासकारों का ध्यान शिवाजी का सामाजिक और राजनीतिक जीवन ही चित्रित करने पर रहा है। अत: शिवाजी के मंगल विवाह, पुत्र जन्म और प्रिय पत्नी की मौत की घटनाओं का वर्णन उपन्यासकारों ने नहीं किया है। परिणामस्वरूप शिवाजी का चरित्र चित्रण परिपूर्ण नहीं हो सका। ऐतिहासिक सत्य की रक्षा करके, कुछ काल्पनिक घटनाओं द्वारा शिवाजी का चरित्र चित्रण प्रभावी बनाने का सुंदर प्रयास भी उपन्यास साहित्य में हुआ है। ऐतिहासिक सत्य को त्यागकर काव्यात्मक न्याय से शिवाजी का चरित्र श्रेष्ठ दिलाने की प्रवृत्ति हिंदी उपन्यासकारों में है। चंद्रराव मोरे वध, सूरत की लूट, शाहिस्ताखाँ - दुर्दशा, पुरंदर संधि और आगरा दरबार के प्रसंगों में शिवाजी का चरित्र चित्रण करते समय उपन्यासकारों ने अपनी कल्पना के अनुसार काव्यात्मक न्याय देकर शिवाजी के चरित्र का प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया है।

(१) उपन्यासकार शिवाजी के चरित्र की ओर निम्न गुणों के कारण आकृष्ट होते हैं। शिवाजी में स्वाभिमान, स्वधर्माभिमान, धार्मिक उदारता, वीरता, नैतिकता और देशभक्ति ये सारे गुण शिवाजी के व्यक्तित्व में विद्यमान थे। इन गुणों का परिचय पाने के लिए उपन्यासकार शिवाजी के चरित्र की ओर आकृष्ट होते हैं।

(२) उपन्यासकारों ने इन गुणों का चित्रण तो किया है, लेकिन यह चित्रण सामान्य ढंग का है। चरित्र - चित्रण में तन्मयता दिखाई नहीं देती। सामान्य स्तर का चित्रण हुआ है।

(३) उपन्यासकारों ने छत्रपति शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय शिवाजी के चरित्र की हानि कर दी है। कारण यह है कि उपन्यासकारों को इतिहास का गहरा ज्ञान नहीं है। इसके साथ ही साथ इतिहास को छोड़कर काल्पनिक घटनाओंका चित्रण किया है। इन दो कारणों के

कारण शिवाजी के चरित्र की उपन्यास में हानि हो गई है ।

(४) हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ सुलझाने के लिए इस चरित्र का उपयोग उपन्यासकारों ने किया है, वह सामान्य रूप का ही है । इसका कारण यह है कि शिवाजी का चित्रण श्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा नहीं हो गया । यादवेन्द्र जैन और भगवतीशरण मिश्र ने ही शिवाजी के चरित्र को अच्छे ढंगसे चित्रित किया है ।

(५) शिवाजी का चित्रण हिंदी उपन्यास साहित्य में श्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा नहीं किया गया । इस कारण उपन्यास साहित्य में सामान्य स्तर का साहित्यिक सौन्दर्य दिखाई देता है । सामान्य स्तर का ही साहित्यिक सौन्दर्य का चित्रण उपन्यास साहित्य में हो गया है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची ---

१) आलोचना - ' उपन्यास विशेषांक ' - सन १९५४ ई.

२) चिंतामणि, - ' ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य '
वाराणसी , सन १९५९ ई.

३) धनंजय - ' हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व '
इलाहाबाद, सन १९७० ई.

४) मथुर - रामनारायण सिंह - ' हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास '
कानपुर, सन १९७१ ई.

५) मोरे व्ही.के - ' हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी के
चरित्र का मूल्यांकन ', शोध प्रबंध, सन १९७५ ई.

६) रांग्रा रणवीर - ' हिंदी उपन्यासों में चरित्र - चित्रण का विकास '
साहित्य मंदिर, दिल्ली, सन १९६१ ई.

७) आ. शास्त्री चतुरसेन ' वैशाली की नगरवधु '

८) त्रिगुणायत गोविंद - ' शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत ' प्रथम भाग,
दिल्ली, सन १९६२ ई.

..